वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 17 कुल पृष्ठ-8 **24 से 30 दिसम्बर, 2020** दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 मा. कृ.-09

शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद में
अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर संन्यास की दीक्षा लेकर

श्री प्रेमपाल शास्त्री बनें स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती

वेदों के प्रकाण्ड विद्वान, तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज ने दी संन्यास दीक्षा

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दीक्षा समारोह में सम्मिलित होकर दी शुभकामना

स्वामी श्रद्धानन्द के पद्चिन्हों पर चलने का भरसक प्रयास करूंगा
– स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती

आर्यजन अधिक से अधिक संन्यासी बनकर पाखण्ड के विरुद्ध बजायें बिगुल
– ठा. विक्रम सिंह

दलितोद्धार का कार्य आर्य समाज को प्राथमिकता से करना चाहिए – सत्यकेतु एडवोकेट

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर आज 23 दिसम्बर, 2020 को शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद में आर्य समाज के एक प्रतिष्ठित एवं कर्मठ कार्यकर्ता आश्रम के आचार्य श्री प्रेमपाल शास्त्री ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को आदर्श मानकर संन्यास की दीक्षा ली। तपोनिष्ठ संन्यासी वेदाचार्य, दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज प्रधान संन्यास आश्रम ने उन्हें संन्यास की दीक्षा देकर स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती के रूप में एक नया विद्वान संन्यासी आर्य समाज को दिया। स्वामी चन्द्रवेश जी ने संन्यासी के कर्त्तव्यों पर प्रकाश डालते हुए स्वामी प्रेमानन्द जी को विशेष निर्देश देते हुए कहा कि वे पुत्रेषणा, लोकेषणा तथा वित्तेषणा से दूर रहकर संन्यास धर्म का दृढ़ता से पालन करें। संस्था को अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़ायें तथा विद्वानों का निर्माण करें।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने 2024 महर्षि दयानन्द जी की दूसरी जन्मशती तक 200 नये आर्य संन्यासी बनाने की महत्त्वाकांक्षी योजना में स्वामी प्रेमानन्द की दीक्षा को महत्त्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने कहा कि आने वाले चार साल में हम आर्य समाज के 200 नये संन्यासी तैयार करें तथा महर्षि दयानन्द जी को तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि दें। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के भावी कार्यक्रम के रूप में सप्तक्रांति के बिन्दुओं पर संक्षेप में प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आर्य समाज चाहता है कि जातिवाद, नशाखोरी, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, पाखण्ड, महिला उत्पीड़न तथा शोषण से समाज को मुक्ति मिले। इसके लिए अधिक से अधिक विद्वान्, तपस्वी एवं संकल्पशील संन्यासियों की आवश्यकता है। अर्थात् जो भी संन्यास की दीक्षा लेना चाहते हैं वे शीघ्र सम्पर्क करें।

प्रसिद्ध दानवीर और राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठा. विक्रम सिंह जी ने आर्यों का आह्वान किया कि अधिक से अधिक आर्यजन संन्यासी बनें और महर्षि दयानन्द जी के मिशन को आगे बढ़ाने में अपनी पूरी शक्ति लगायें।

संन्यास आश्रम गाजियाबाद के मंत्री एवं प्रो. रतन सिंह जी के सुपुत्र श्री सत्यकेतु एडवोकेट ने दलितोद्धार के लिए ठोस योजना बनाने पर बल दिया।

स्वामी विश्वानन्द जी ने कहा कि सही मायने में संन्यास का मतलब होता है पूरी वसुधा को अपना परिवार मानना, अर्थात् संन्यासी को किसी के प्रति भेदभाव नहीं होता है। स्वामी प्रेमानन्द जी से अपेक्षा है कि वे पूरे मानवमात्र के कल्याण के लिए कार्य करेंगे।

संन्यास की दीक्षा लेने वाले स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती जी ने इस अवसर संकल्प लेते हुए घोषणा की कि वे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के पद्चिन्हों पर चलने का भरसक प्रयास करेंगे और संन्यास आश्रम की उन्नति में चार चांद लगाकर दिखायेंगे। शीघ्र ही संन्यास आश्रम, गाजियाबाद प्रचार का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र विकसित होगा। स्वामी प्रेमानन्द जी के संन्यास की दीक्षा में श्री स्वामी विश्वानन्द, स्वामी चन्द्रदेव मेरठ, आचार्य ओमव्रत, आचार्य दिवाकर, आचार्य विक्रमदेव, डॉ. कपिल आचार्य, श्री सुधीर रावल, श्री ऋषिपाल रांणा, श्री राजीव, आचार्य सत्यपति, श्री सतीश शास्त्री, श्री राकेश मित्तल, श्री अजय आर्य एवं कुमारी वन्दना आर्या ने भी अपनी शुभकामनाएँ दी।

समारोह के पश्चात् ऋषि लंगर में समधुर भोजन की व्यवस्था की गई थी।

सच्चरित्रता की पक्की नींव धर्म

– आचार्य श्रवण कुमार (व्याकरण दर्शनाचार्य)

सभी सच्चे धर्मनिष्ठ लोगों में सद्‌गुण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। ऋषि दयानन्द, महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, गुरुनानक, सन्त कबीर, गुरु रामदास इत्यादि महापुरुषों में सद्‌गुणों की मात्रा इतनी अधिक दिखाई देती है कि साधारण व्यक्ति उसे देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। इस प्रकार के धर्मशील महापुरुष अपने प्रभाव से सर्वसाधारण जनता के चारित्रिक मानदण्ड को भी बहुत ऊँचा कर देते हैं। इस प्रकार जनता में चारित्रिक गुण उत्पन्न करने की दृष्टि से धर्म का बड़ा ऊँचा और महत्त्वपूर्ण स्थान है।

धर्म और ईश्वर का विरोध करने वाले लोग कहते हैं कि धर्म को मानने की क्या आवश्यकता है? धर्म को मानने वाले लोग धर्म का यही तो लाभ बताते हैं कि उससे हमारे अन्दर सत्य, न्याय, दया, तप, त्याग और उपकार आदि चरित्र सम्बन्धी सद्‌गुण उत्पन्न होते हैं। हम इन चरित्र सम्बन्धी सद्‌गुणों को अपने भीतर धर्म के बिना भी उत्पन्न कर सकते हैं। अनेक नास्तिक लोगों में ये सद्‌गुण बड़ी ऊँची मात्रा में पाए जाते हैं। हम अपने व्यवहार में इन सद्‌गुणों का पालन करते रहेंगे। हमें धर्म को मानकर आत्मा, परमात्मा, लोक, परलोक और कर्मफल आदि के जंजाल में पड़ने की क्या आवश्यकता है?

धर्म विरोधियों का यह कथन ऊपर–ऊपर से सुनने में रोचक प्रतीत होता है। गहराई में विचार करने पर पता चलता है कि धर्म को माने बिना, आत्मा–परमात्मा की सत्ता और लोक–परलोक तथा कर्मफल के सिद्धान्त को मानें बिना चरित्र सम्बन्धी सद्‌गुण खड़े नहीं रह सकते। हमारी सच्चरित्रता आत्मा–परमात्मा और लोक–परलोक तथा कर्मफल के सिद्धान्त के आधार पर ही टिकी हुई है।

यदि हम नास्तिक लोगों की बातें मानकर भौतिकवादी बन जाएँ और यह मानने लग पड़े कि आत्मा नाम की कोई सत्ता नहीं है, जिसे हम आत्मा कहते हैं वह तो प्राकृतिक जड़ पदार्थों के संयोग का परिणाम है, जिस प्रकार आग और पानी के संयोग का परिणाम जल की उष्णता है। अथवा जैसे पोटैशियम फैरो साइनाइड के हल्के पीले से रंग के घोल में फैरिक क्लोराइड का हल्के पीले से रंग के घाल मिला देने से उसमें गहरा नीला रंग आ जाता है। हमारे उत्पन्न होने से पूर्व हमारा आत्मा नहीं था, और हमारे मर जाने के बाद न कोई अगला जन्म होगा, बस जो कुछ है यह हमारा वर्तमान जन्म ही है। इस जन्म में हम जो कुछ कर लें, कर लें, इस जन्म में हम जो कुछ सुख भोग भोगना चाहें भोग लें, आगे कुछ नहीं होने और मिलने वाला है, आँख मिची और सब कुछ समाप्त, भौतिकतावादी नास्तिक बनकर यदि हम मानने लग पड़े कि परमात्मा की भी सत्ता कुछ नहीं है – इस जगत् को बनाने वाला और चलाने वाला तथा हमारे कर्मों का फल देने वाला परमात्मा कोई नहीं है तो हमारी सच्चरित्रता ठहर नहीं सकेगी।

जब हमारा केवल यही जन्म है और इसी में हम जो कर लें और जो सुख भोग भोगना चाहें भोग लें, तो हममें बुरे कर्मों से बचने की प्रवृत्ति नहीं होगी। तब हमारे अन्दर यह प्रवृत्ति जाग उठेगी कि यह थोड़ा सा तो समय हमारे पास है जिसमें हम जो सुख भोगना चाहें भोग सकते हैं, इसीलिए जिस किसी तरह भी हमें अपने जीवन को सुखी बनाकर रखना चाहिए। इस प्रवृत्ति के वश में आकर हम अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए बुरे कर्म करने से रोक नहीं पायेंगे। बुरे कर्मों का दण्ड देने वाला परमात्मा तो कोई है ही नहीं, जिसका हमें भय रहे। अगला जन्म भी कोई नहीं है जिसमें हमें बुरे कर्मो का फल भोगना पड़े। तो हमें बुरे कर्मो से बचकर सच्चरित्र बनने की प्रेरणा क्यों होगी?

आत्मा–परमात्मा की सत्ता, पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धान्त को न मानकर केवल यही एक जन्म मानने की व्यवस्था में तो हमारा उद्देश्य केवल अपने इस वर्तमान जीवन को सुखी बनाना रह जायेगा। हमें अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए झूठ–फरेब, धोखे–धड़ी और अन्याय–अत्याचार का भी अवलम्बन करना पड़े तो वह कर लेना चाहिए। इस प्रकार के दुराचरणों से हमें क्यों रुकना चाहिए?

कहा जा सकता है कि जैसे हम सुखी बनना चाहते हैं वैसे ही और लोग भी सुखी बनना चाहते हैं। इसलिए झूठ–फरेब आदि का सहारा लेकर हमें दूसरों के जीवन को दुःखी नहीं बनाना चाहिए। परन्तु यदि कोई अपनी यह मनोवृत्ति बना ले कि दूसरे लोग मेरे किसी आचरण से दुःखी होते हैं तो होते रहें, मुझे तो अपने जीवन को सुखी बनाना है। मैं तो जैसे भी होगा अपने को सुखी बनाऊँगा। तो ऐसी मनोवृत्ति वाले व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकता है? कहा जा सकता है कि दूसरे लोग उसके दुर्व्यवहारों से तंग आकर उसे पकड़ लेंगे और दण्डित करेंगे और इस प्रकार उसे अपने बुरे कर्मों का फल दुःख मिलेगा, अतः उसे बुरे कर्मों से बचने की सीख स्वयं मिल जायेगी कि उसे बुरे कर्मों से बचना चाहिए। परन्तु पकड़ में तो कोई व्यक्ति अपनी असावधानी और गलती से आता है। यदि कोई व्यक्ति पूर्ण सावधान होकर चतुराई और बुद्धिमत्ता से दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करके अपने को सुखी बनाता रहे तो ऐसे व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकेगा? फिर यदि कोई यह सोच ले कि कभी अपनी असावधानी से पकड़ भी लिया गया और उससे दण्डित होकर कुछ दुःख भोगना भी पड़ गया तो क्या बात है? अधिकतर तो मैं दूसरों को ठग और लूटकर अपने जीवन को सुखी ही रखता हूँ, तो ऐसे व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकेगा? यदि हम छिपकर पाप करते हैं? उससे तो हम अपने जीवन को सुखी बना रहे हैं। आत्मा–परमात्मा की सत्ता, पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धान्त को न मानने वाले भौतिकवादी नास्तिकों के पास इन प्रश्नों का कोई समाधान नहीं है।

आत्मा–परमात्मा आदि की सत्ता को स्वीकार न करने की अवस्था में तो मनुष्य की प्रवृत्ति स्वभावतः चार्वाकों की सी हो जायेगी और वह चार्वाकों के स्वर में स्वर मिलाकर कहने लगेगा – 'मौत से कोई भी बच नहीं सकता इसलिए जब तक जीना है सुख से जीना चाहिए। क्योंकि मरने के बाद जलकर राख हो जाने के पीछे सुख भोगने के लिए शरीर कहाँ से मिलेगा? जब तक जीना है सुख से जीना चाहिए और अपने को सुखी बनाने के लिए ऋण लेकर भी घी पीते रहना चाहिए।

फिर एक बात और यहाँ विचारने की है। आत्मा और परमात्मा को न मानने की अवस्था में अच्छे और बुरे, सच्चारित्र्य का भेद कैसे किया जा सकेगा? हमारे किसी कर्म को अच्छा या बुरा कहकर उसकी अच्छाई और बुराई का निर्माण करने वाला कोई परमात्मा या आत्मा तो है ही नहीं। भौतिकवादी नास्तिकों के मत में परमात्मा की सत्ता तो बिल्कुल ही नहीं है। आत्मा की भी वास्तविक सत्ता नहीं है। आत्मा या चेतना जो कुछ है केवल प्राकृतिक जड़ पदार्थों के एक विशेष प्रकार के संयोग का परिणाम है। जिस प्रकार आग और जल के एक विशेष संयोग का परिणाम जल की उष्णता है। ऐसी अवस्था में, जिस प्रकार जल की उष्णता प्राकृतिक होने के कारण जड़ ही है, उसी प्रकार हमारे शरीर के प्राकृतिक जड़ पदार्थों के संयोग का परिणाम होने के कारण प्राकृतिक होने से हमारा आत्मा भी वस्तुतः जड़ ही है, ऐसा हमें मानना पड़ेगा और हमें यह भी मानना पड़ेगा कि यह हमारा आत्मा कोई पृथक पदार्थ नहीं, हमारे शरीर के प्राकृतिक पदार्थों में रहने वाला उन पदार्थों का एक गुणमात्र है। तो जिस आत्मा की कोई पृथक् सत्ता ही नहीं है, जो हमारे शरीर के प्राकृतिक जड़ पदार्थों का ही एक गुणमात्र है और जड़ है, वह आत्मा हमारे कर्मों की अच्छाई और बुराई का निर्णय किस प्रकार कर सकेगा? इस प्रकार हमारे कर्मों की अच्छाई या बुराई का निर्णय करने वाली कोई सत्ता न होने के कारण, हमारे कोई भी कर्म अच्छे या बुरे नहीं रहेंगे। हमारे सभी कर्म एक जैसे ही हो जायेंगे। हम जैसा चाहें कर लें। हम किसी के किसी कर्म को दुराचरण या अनैतिक और सदाचरण या नैतिक नहीं कह सकेंगे।

इसलिए धर्म के बिना सच्चरित्रता की नींव खड़ी नहीं रह सकती। धर्म आत्मा को भी मानता है और परमात्मा को भी। आत्मा अपनी स्वतन्त्रता से अच्छे या बुरे कर्म करता है। अपने कर्मों का फल भोगने में आत्मा परमात्मा के अधीन है। बुरे कर्मो का फल आत्मा को परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर दुःख के रूप में भोगना पड़ता है, और अच्छे कर्मों का फल सुख के रूप में। परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर कर्मो का फल आवश्यक रूप से कर्मफल भोग से आत्मा बच नहीं सकता है। कर्मफल प्रदाता परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर कर्मों का फल आवश्यक रूप से भोगे जाने का यह सिद्धान्त आत्मा को बुरे कर्मों से दूर रहने की प्रेरणा करता है। धर्म में परलोक और पुनर्जन्म के सिद्धान्त को भी माना जाता है। यदि इस जन्म में हमें परमात्मा ने हमारे कर्मों का फल दुःख के रूप में नहीं दिया है तो अगले जन्म में दिया जायेगा, उससे छूट नहीं सकते, अगले जन्म में भी फल मिल सकने का यह सिद्धान्त हमारे मन में बुरे कर्मों के प्रति और भी अधिक भय उत्पन्न कर देता है। कर्मफल भोग के इस भय के कारण हम दुराचरणों से बच कर सदाचरण से रहने का प्रयत्न करने लगते हैं। ऐसा करते–करते हम स्वभाव से ही अच्छे आचरण करने वाले बन जाते हैं। परमात्मा के भय के कारण बुरे कर्मों से बचे रहने की बात हमारे मन की पृष्ठभूमि में बहुत गहराई से बैठी रहती है। धर्म सृष्टि के आरम्भ से इस प्रकार हमें सच्चारित्र्य सिखाता आ रहा है।

धर्म द्वारा की जाने वाली अपनी इस सेवा के कारण संसार को धर्म का धन्यवाद करना चाहिए। जिस दिन संसार से धर्म को सर्वथा मिटा दिया जायेगा, जिस दिन लोग आत्मा, परमात्मा, लोक और परलोक को मानना सर्वथा छोड़ देंगे, जिस दिन कर्मफल भोग के सिद्धान्त में लोगों का विश्वास बिल्कुल नहीं रहेगा, जिस दिन परमात्मा की भक्ति द्वारा परमात्मा के गुणों को अपने भीतर धारण करने वाले धर्मनिष्ठ लोग सर्वथा पैदा होना बन्द हो जायेंगे, उस दिन के थोड़े समय के पश्चात् संसार से सच्चरित्रता समाप्त हो जायेगी। आज संसार के लोगों में जितनी सच्चरित्रता दिखती है उसका मूल स्रोत धर्म ही है।

नास्तिक लोगों में जो कुछ सच्चरित्रता दिखाई पड़ती है उसका मूल स्रोत भी धर्म ही है। धर्म द्वारा सिखाए गए, परम्परा से चले आ रहे सच्चरित्रता के तत्त्वों को नास्तिक लोगों ने भी स्वीकार कर लिया है। जैसे गंगा से निकली हुई नहर में से निकली हुई अन्य नहर बहुत दूर के खेतों में जाकर पानी दे देती है और उन खेतों और उनके किसानों को पता नहीं होता कि यह पानी गंगा का है, इसी प्रकार नास्तिकों को भी पता नहीं है उनमें जो सच्चरित्रता है वह मूल रूप में धर्म की गंगा से ही निकलती है। नास्तिकता का दर्शनशास्त्र, जैसा ऊपर दिखाया गया है, स्वयं सच्चरित्रता को जन्म नहीं दे सकता।

जब धर्म नहीं रहेगा तो सच्चरित्रता भी नहीं रहेगी और संसार में अन्धपरम्परा चल पड़ेगी। कोई किसी को सन्मार्ग न दिखा सकेगा। तब संसार के लोगों में मात्स्य – न्याय चलने लगेगा। जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है वैसे ही शक्तिशाली लोग दुर्बल लोगों को खाने लग पड़ेंगे। उस घोर अधर्म की अवस्था में न स्वतन्त्रता रहेगी और न किसी राष्ट्र की किसी प्रकार कोई उन्नति।

परन्तु संसार यह सुनकर निश्चिन्त रहे कि राम, कृष्ण, दयानन्द, विवेकानन्द, महात्मा गांधी जैसे महापुरुष धर्मनिष्ठ लोगों के समय–समय पर जन्म लेते रहने के कारण वह बुरा दिन कभी न आने पायेगा। धर्म को नास्तिकवाद से भय नहीं है। आत्मा–परमात्मा की सत्ता और पुनर्जन्म तथा कर्मफल के सिद्धान्त को सिद्ध करने के लिए धर्मवालों के पास प्रबल तर्क हैं। पहले भी नास्तिक लोग आते रहे हैं। हम आस्तिक लोग अपने तर्कों से उनकी बातों का खण्डन करते रहे हैं।

यहाँ एक बात और भी देखने की है। सच्चरित्र रहने के लिए हमें सच्चरित्र पुरुषों की संगति की आवश्यकता पड़ती है। अच्छी बुरी जैसी संगति में रहा करते हैं वैसे बन जाया करते हैं। संसार में हमें पूर्ण सच्चरित्र पुरुषों की संगति प्रायः प्राप्त नहीं होती। धर्म इस सम्बन्ध में भी हमारी सहायता करता है। परम पुरुष परमात्मा की उपासना व भक्ति करके सबसे अधिक सच्चरित्र सत्ता की संगति प्राप्त होती है। उपासना द्वारा प्रभु की संगति में बैठे रहने से हमारे अन्दर चरित्र सम्बन्धी सब सद्‌गुण आ जाते हैं।

इस प्रकार विचार करने से यही निष्कर्ष निकलता है कि बिना धर्म के सच्चरित्रता की दीवाल खड़ी नहीं हो सकती। किसी भी दृष्टि से हम देखें, अन्ततः हमें सच्चरित्रता का आधार धर्म को ही मानना पड़ेगा। धर्म की वृद्धि सच्चरित्रता की वृद्धि है। धर्म की हानि सच्चरित्रता की हानि है। सच्चरित्रता की वृद्धि से ही समाज में सुख शान्ति की स्थापना होगी, परस्पर एक दूसरे की उन्नत्यर्थं मनुष्य अग्रसर होंगे। इसलिए हम सभी को चाहिए कि धर्म की वृद्धि के लिए मन–तन–धन से समर्पित होकर सच्चरित्रता नींव के मजबूत पत्थर बनकर अपनी कर्त्तव्य पारायणता का परिचय दें।

– 'पाणिनि महाविद्यालय' रेवली, सोनीपत

ईश्वर की सिद्धि तीन प्रमाणों से

– आचार्य श्री ज्ञानेश्वर

जैसे विज्ञान के क्षेत्र में वस्तुएं तीनों (प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द) प्रमाणों से सिद्ध होती हैं, और मानी जाती हैं, वैसे ही ईश्वर भी तीनों प्रमाणों से सिद्ध होता है, अतः उनको मानना चाहिए। परन्तु ईश्वर का प्रत्यक्ष नेत्रादि इन्द्रियों से नहीं होता है, बल्कि मनादि अन्तःकरण से होता है। ईश्वर की सिद्धि तीनों प्रमाणों से होती है, इसे निम्न प्रकार से समझना चाहिए।

ईश्वर की सिद्धि प्रत्यक्ष प्रमाण से –

प्रत्यक्ष दो प्रकार का होता है, एक बाह्य, दूसरा आन्तरिक! नेत्रादि इन्द्रियों से रूपादि विषय वाली वस्तुओं का जो प्रत्यक्ष होता है, वह बाह्य प्रत्यक्ष कहलाता है, और मन–बुद्धि आदि अन्तःकरण से सुख–दुःख, राग–द्वेष, भूख–प्यास आदि का जो प्रत्यक्ष होता है, वह आन्तरिक प्रत्यक्ष कहलाता है।

जैसे रूपादि विषय वाली वस्तु को देखने के लिए नेत्रादि इन्द्रियों का स्वस्थ स्वच्छ तथा कार्यकारी होना आवश्यक है, वैसे ही आत्मा–परमात्मा को प्रत्यक्ष करने के लिए मन–बुद्धि आदि अन्तःकरण का भी स्वस्थ तथा पवित्र होना अनिवार्य है। जैसे आंख में धूल गिर जाने पर या सूजन हो जाने पर या मोतियाबिन्द हो जाने पर वस्तु दिखाई नहीं देती, वैसे ही राग–द्वेषादि के कारण मन आदि अन्तःकरण के अपवित्र या रजोगुण के कारण चंचल हो जाने पर आत्मा–परमात्मा का प्रत्यक्ष नहीं होता। जैसे सुख–दुःखादि विषयों का प्रत्यक्ष नेत्रादि बाह्य इन्द्रियों से नहीं होता, केवल रूप रसादि विषयों का ही होता है, वैसे ही आत्मा–परमात्मा, मन–बुद्धि आदि सूक्ष्म विषयों का प्रत्यक्ष भी नेत्रादि इन्द्रियों से नहीं होता, मन आदि अन्तःकरण से होता है, यह ईश्वर के प्रत्यक्ष करने की पद्धति है।

ईश्वर की सिद्धि अनुमान प्रमाण से –

इसी प्रकार अनुमान प्रमाण से भी ईश्वर की सिद्धि होती है। कोई भी वस्तु यथा मकान, रेल, घड़ी आदि बिना बनाने वाले के नहीं बनती, चाहे हमने मकान, रेल, घड़ी आदि के बनाने वाले को अपनी आंखों से न भी देखा हो, तो भी उसके बनाने वाले की सत्ता को मानते हैं। ठीक इसी प्रकार से वैज्ञानिक लोग इन पृथ्वी, सूर्यादि की उत्पत्ति करोड़ों वर्ष पुरानी मानते हैं। इससे भी सिद्ध है कि इनको बनाने वाला भी कोई न कोई अवश्य ही है। क्योंकि ये पृथ्वी, सूर्यादि जड़ पदार्थ अपने आप बन नहीं सकते, जैसे कि रेल आदि अपने आप नहीं बन सकते और न सूर्यादि को मनुष्य लोग बना सकते हैं, क्योंकि मनुष्यों में इतना सामर्थ्य और ज्ञान नहीं हैं इसलिए जो इन्हें बनाता है, वहीं ईश्वर है।

ईश्वर की सिद्धि शब्द प्रमाण से –

जिन साधकों (ऋषियों) ने यम नियमादि योग के आठ अंगों का अनुष्ठान करके मन आदि अन्तःकरण को एकाग्र व पवित्र बनाया, वे कहते हैं कि समाधि में आत्मा परमात्मा का प्रत्यक्ष होता है। किन्तु यह प्रत्यक्ष नेत्रादि इन्द्रियों से होने वाले बाह्य प्रत्यक्ष के समान रंग रूप वाला न होकर, सुख–दुःखादि के समान आन्तरिक अनुभूति है। ऋषियों का अनुभव यह है, जो हमारे लिए शब्द प्रमाण है –

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।

अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः।।

– मुण्डकोपनिषद् 3–1–5

अर्थः – यह भगवान् (ईश्वर) सदा सत्य आचरण से, तप से, यथार्थ ज्ञान से और ब्रह्मचर्य से प्राप्त किया जाता है। वह शरीर के भीतर ही प्रकाशमय (ज्ञानस्वरूप) और शुद्ध (पवित्र) स्वरूप में विद्यमान है। योगी लोग राग द्वेष आदि दोषों को नष्ट करके समाधि में उसे देख अनुभव कर लेते हैं।

जैसे वैज्ञानिकों के विवरण पृथ्वी, सूर्य, आकाश गंगाओं आदि के सम्बन्ध में शब्द प्रमाण के रूप में स्वीकार किये जाते हैं, क्योंकि उन्होंने उन विषयों को ठीक–ठीक जाना है। इसी प्रकार से ऋषियों के भी ईश्वर सम्बन्धी विवरण शब्द प्रमाण के रूप में अवश्य ही स्वीकार करने चाहिए, क्योंकि उन्होंने भी समाधि के माध्यम से ईश्वर को ठीक–ठीक जाना है।

इसलिए तीनों प्रमाणों से ईश्वर की सत्ता सिद्ध है। नास्तिक लोग उपर्युक्त तीनों प्रमाणों पर विशेष ध्यान दें और शुद्ध अन्तःकरण से आत्मा के द्वारा ईश्वर के आन्तरिक प्रत्यक्ष को स्वीकार करें, यही न्याय की बात है।

अन्यथा आंख से न दीखने वाली वायु, शब्द, गन्ध, सुख–दुःख, मन–बुद्धि, भूख–प्यास, दर्द आदि को और पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति, विद्युत तरंगों अल्फा, बीटा, गामा और एक्स किरणों को भी मानना छोड़ दें। यदि इनको मानना नहीं छोड़ते हैं तो ईश्वर की सत्ता को भी स्वीकार करें।

पर्यावरण और सांस्कृतिक चेतना

– डॉ. आशा मेहता

पर्यावरण के अन्तर्गत नदी, पहाड़, जल, पशु–पक्षी, हवा, मिट्टी के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनतिक परिस्थितियाँ भी समाहित हैं। वर्तमान में बढ़ती जा रही प्रदूषण की समस्या को सुलझाना है तो सांस्कृतिक चेतना के उसी आधार को पुनः जीवित करना ही होगा जिसे भौतिकता की चकाचौंध में हम भूल गये हैं।

डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' ने संस्कृति की व्याख्या करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है 'अतएव संस्कृति वह भावबोध है जो हमारे सारे जीवन में व्याप्त है और जिसकी रचना एवं विकास में अनेक सदियों का हाथ है।' विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी भारतीय संस्कृति के आधार को स्पष्ट करते हुए कहा था कि भारतीय संस्कृति न गांवों की है और न ही नगरों की, वास्तव में भारत की संस्कृति अरण्य संस्कृति है।

हमारे महान और दूरदर्शी ऋषियों, मुनियों एवं तपस्वियों ने अपनी दीर्घकालीन साधना से इतिहास, परम्परा, दर्शन तथा संस्कृति का निर्माण किया। उनके गूढ़ सूत्रों को व्याख्या करने वाले नहीं समझ सके और उन्होंने अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु बाह्य कर्मकाण्डों द्वारा भारतीय सनातन संस्कृति के उदात्त व शाश्वत मूल्यों की गरिमा को नष्ट करने का प्रयास किया।

संस्कृति वास्तव में जीवन की एक शैली है। इस दृष्टि से जब हम पर्यावरण का विश्लेषण करते हैं तो पता चलता है कि प्रकृति और संस्कृति अन्योन्याश्रित हैं। प्रकृति व्यक्ति के आन्तरिक और बाह्य स्तर पर भौतिक पर्यावरण निर्मित करती है तो संस्कृति से व्यक्ति के अन्तः और बाह्य सांस्कृतिक पर्यावरण की रचना होती है। उदाहरणार्थ सांस्कृतिक पर्यावरण से युक्त व्यक्ति प्रकृति के प्रति आत्मीयता रखेगा और कभी भी उसका शोषण नहीं करेगा। भारतीय संस्कृति के संदर्भ में यह बात विशेष ध्यातव्य है कि भारत का सांस्कृतिक आदर्श और परम्परागत आधार अध्यात्म रहा है। आधुनिक शब्दावली में जिसे पर्यावरण, परिवेशिकी और परिस्थितिकी कहा जाता है उसे ही भारतीय संस्कृति की शब्दावली में 'प्रकृति' कहते हैं।

अथर्ववेद में पृथ्वी से आत्मीयता इन शब्दों में व्यक्त की गई है – जिस धरती पर वृक्ष, वनस्पति एवं औषधियां हैं जहां स्थिर और चंचल सबका निवास है उस विश्वम्भरा धरती (मातृभूमि) के प्रति हम कृतज्ञ हैं – हम उसकी स्वतंत्रता की प्राणपण से रक्षा करेंगे।'

–अथर्ववेद 12.10.31

कृतज्ञता का यह भाव सांस्कृतिक चेतना के कारण आज तक हमारे रोम–रोम में बसा हुआ है, इसी कारण प्रातःकाल पृथ्वी का स्पर्श कर उसे प्रणाम करते हुए क्षमायाचना की जाती है।

आज अनेक पर्यावरणविद् प्रकृति की ओर लौटों का नारा लगा रहे हैं लेकिन स्वार्थ की आपाधापी में सुनने की फुर्सत किसे है? किन्तु जनमानस की सांस्कृतिक चेतना जाग्रत करके यह अवश्य बताया जा सकता है कि प्रकृति का संरक्षण ही मानवता का रक्षण है।

भारतीय संस्कृति का मूल स्वर अहिंसा है। इस अहिंसा का आधार भी आध्यात्मिक है क्योंकि भारतीय संस्कृति के अनुसार सारी सृष्टि ब्रह्म में व्याप्त है। जड़–चेतन सभी ब्रह्ममय है। यही कारण है कि भारत में वृक्ष काटने को ब्रह्महत्या के समान माना गया है। हमारी संस्कृति में मांसाहार के बदले शाकाहार को इसीलिए स्वीकार किया गया है क्योंकि यहां सभी को जीने का समान अधिकार है। सांस्कृतिक चेतना की जीवन्तता का यह विशिष्ट प्रमाण है कि इसमें मनुष्य होने का व्यापक अर्थ यह है कि वह अपने आसपास के जैविक संसार के प्रति किस प्रकार का व्यवहार करता है? सम्पूर्ण प्रकृति में मनुष्य सर्वाधिक चेतनशील प्राणी है? पशु–पक्षी, पेड़, वनस्पतियाँ कम चेतनशील हैं अतः मनुष्य का यह दायित्व बन जाता है कि वह अपने से कम सामर्थ्यी की रक्षा करे तभी वह विवेकी और जाग्रत कहलाने का अधिकारी हो सकेगा।

भारतीय संस्कृति में हम अनेक पर्वों पर वन्य जीवों एवं वनस्पतियों की अर्चना करते हैं। अर्चना से तात्पर्य रक्षण से हैं। सरस्वती के साथ मोर, दुर्गा के साथ सिंह, गणेश के साथ चूहा, शिव के साथ बैल और कृष्ण के साथ गाय पूज रहे हैं। तुलसी घर–घर में पूज्य है। पीपल में विष्णु का वास हैं वट वृक्ष सौभाग्यदायी है। नीम की कोंपलें चैत्र नवरात्र में सेवनीय है।

हिंसा को पाप मानते हुए 'मनुस्मृति' में कहा गया है कि जो व्यक्ति पशु हत्या की आज्ञा देता है, जो पशु को काटता है, जो उसे मारता है, जो मांस बेचता या खरीदता है जो उसे परोसता है और जो उसे खाता है वे सब हत्या के दोषी हैं। इसी तरह अपने आनन्द के लिए जो व्यक्ति निर्दोष पशुओं का वध करता है, उसे न तो जीवित रहते और न मरने के बाद कभी खुशी मिल सकती है।

विकास के नाम पर प्रकृति के जीवनदायी तत्त्वों से खिलवाड़ करने वाले स्वार्थी मानव ने प्रकृति का अदूरदर्शितापूर्वक अन्धाधुन्ध दोहन व शोषण किया है परिणामस्वरूप कार्बन–डाई–आक्साइड, मोनो आक्साइड, औद्योगिकधूल, परमाणु रेणु, चिमनियों के धुंए और अम्लीय वर्षा के माध्यम से अनेक गम्भीर रोगों के साथ–साथ प्रदूषित भोजन, प्रदूषित वायु, प्रदूषित जल के रूप में महाविनाश का उपहार प्रदान किया है। प्रदूषण की यह भयावह और विकट स्थिति हमारे लिए तो घातक है ही आने वाली पीढ़ियों के लिए तो और भी अधिक घातक सिद्ध होगी। भावी पीढ़ियाँ इस गम्भीर अपराध के लिए क्या हमें क्षमा कर पायेंगी?

पर्यावरण प्रदूषण की इस त्रासद स्थिति में 'प्रकृति की ओर लौटो' का नारा केवल शाब्दिक शोभा वाक्य बनकर न रह जाये इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को सांस्कृतिक दृष्टि सम्पन्न बनाना होगा। सुदृढ़ आस्था और निरन्तर कर्मशीलता ही हमें पर्यावरण प्रदूषण के इस संकट से उबार सकती है –

घोर तामस में उजाला अब करेंगे हम, शुष्क मानव सुमन में सौरभ भरेंगे हम।

सुदृढ़ आस्था को कभी गिरने नहीं देंगे, धैर्य से बाधा समन्दर को तरेंगे हम।।

– प्रवक्ता हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांसवाड़ा, राजस्थान–327001

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अन्तरंग सभा की महत्त्वपूर्ण बैठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में सम्पन्न

श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट को राजस्थान सभा का नया प्रधान निर्वाचित किया गया

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अन्तरंग सभा की एक महत्त्वपूर्ण बैठक 20 दिसम्बर, 2020 को आर्य समाज आदर्शनगर, जयपुर में आहूत की गई थी। इस बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से उपस्थित रहे। कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण आर्य समाज की समस्त गतिविधियाँ गत मार्च, 2020 से ही स्थगित चल रही हैं जिसके कारण संगठन में निष्क्रियता आई हुई थी। इस बीच आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के संरक्षक एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी एवं राजस्थान सभा के कार्यकारी प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य जी के दुःखद निधन से भी राजस्थान के सभी कार्यकर्ताओं में निराशा होना स्वाभाविक था।

राजस्थान सभा के प्रधान श्री हवा सिंह आर्य के भी अस्वस्थता के कारण प्रधान पद से त्याग पत्र देने के कारण सभा का प्रधान पद, कार्यकारी प्रधान पद रिक्त चल रहे थे। इस स्थिति में कार्यकर्ताओं तथा अन्तरंग सभा के सभी सदस्यों के आग्रह पर सभा मंत्री श्री कमलेश आर्य ने अन्तरंग सभा आमंत्रित की थी और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देने के लिए आमंत्रित किया था।

20 दिसम्बर, 2020 को प्रातः 11 बजे अन्तरंग सभा की कार्यवाही स्तुति प्रार्थना उपासना के मन्त्रों के साथ प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम ओजस्वी वक्ता, प्रखर लेखक, विख्यात आर्यनेता श्री सत्यव्रत सामवेदी, सुलझे हुए मनीषी एवं कुशल संगठनकर्ता, आर्य समाज को सर्वात्मना समर्पित श्री राम सिंह आर्य, प्रसिद्ध विदुषी श्रीमती सरोज वर्मा, जुझारू युवा कार्यकर्ता श्री अजीत सिंह गहलोत आदि के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा उनके परिजनों के प्रति सांत्वना देते हुए शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

राजस्थान सभा के प्रधान पद के निर्वाचन की प्रक्रिया प्रारम्भ करते हुए सभा के पूर्व मंत्री और वरिष्ठ आर्यनेता श्री ओम प्रकाश वर्मा जी ने सभा के उपप्रधान और जुझारू आर्यनेता श्री बिरजानन्द जी का नाम प्रस्तुत किया। उनका अनुमोदन सभा के कोषाध्यक्ष श्री बलदेवराज आर्य, आर्य वीरदल राजस्थान के अधिष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य जोधपुर, आर्य समाज शिवगंज के प्रधान श्री हरदेव आर्य एवं श्री अनन्तराम आर्य भरतपुर आदि ने किया। सर्वसम्मति से श्री बिरजानन्द जी को नये प्रधान के रूप में तालियों की गड़गड़ाहट के बीच प्रधान घोषित किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने इस निर्वाचन पर सभी उपस्थित अन्तरंग सदस्य एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों को बधाई देते हुए कहा कि श्री बिरजानन्द जी को सभा प्रधान बनाने का आप सबका निर्णय न केवल प्रशंसनीय है, अपितु वर्तमान समय में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भी है। क्योंकि श्री बिरजानन्द जी एक ऐसे जुझारू, कर्मठ एवं निष्ठावान, अनुभवी आर्यनेता हैं जो संगठन में आई शिथिलता एवं निराशा को दूर कर सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि श्री बिरजानन्द जी को मैं लगभग 50 वर्ष से जानता हूँ और उनके द्वारा किये गये अनेक संघर्षों एवं आन्दोलनों से भली–भांति परिचित हूँ। सन् 1966 में गोरक्षा आन्दोलन में श्री बिरजानन्द जी जेल गये और लगभग एक महीने तक दिल्ली तिहाड़ जेल में बन्द रहे। उस समय वे 8वीं कक्षा के छात्र थे, उसके बाद विशाल किसान आन्दोलन उनके नेतृत्व में चलाया गया। आपातकाल में लगभग दो महीने नारनौल की जेल में बन्द रहे। स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में किये गये समस्त राष्ट्रीय तथा प्रान्तीय आन्दोलनों में श्री बिरजानन्द जी ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। 1987 में दिल्ली से देवराला तक आयोजित की गई सतीप्रथा विरोधी पदयात्रा में निरन्तर 18 दिन तक श्री बिरजानन्द जी इस यात्रा की संयोजन समिति के प्रमुख सदस्यों में सम्मिलित रहे और पूरा समय देकर यात्रा की व्यवस्था को संभाला। इसी प्रकार चाहे टंकारा से अमृतसर तक कन्या भ्रूण हत्या विरोधी जनचेतना यात्रा रही हो या हरियाणा तथा देश के अन्य प्रान्तों में सार्वदेशिक सभा या सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न जन–जागरण यात्राएँ रही हैं उन सभी में श्री बिरजानन्द जी ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई है। आपने नवयुवकों के सैकड़ों शिविर आयोजित करके उन्हें देशभक्ति, चरित्र एवं वैदिक विचारधारा से ओत–प्रोत किया है। अलवर जिले के बहरोड़ क्षेत्र में श्री बिरजानन्द जी एक प्रभावशाली नेता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वकालत में स्नातक तक की शिक्षा पूरी करके आपने अपना अधिकतर समय सामाजिक गतिविधियों में लगाने का निश्चय किया। इसी बीच उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहकर कार्य किया और बहरोड़ में विधानसभा का चुनाव भी लड़ा। आर्य समाज की विचारधारा उन्हें अपने परिवार से ही मिली किन्तु बाद में स्वामी इन्द्रवेश जी से प्रेरित होकर वे आर्य समाज के कार्यों में सर्वात्मना समर्पित हो गये।

वर्तमान में आप सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य, तथा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान के रूप में कार्य कर रहे हैं। उन्हें सभा के प्रधान पद पर निर्वाचित करके राजस्थान सभा ने सही समय पर सही निर्णय किया है। मुझे पूरी आशा है कि श्री बिरजानन्द जी राजस्थान में आर्य समाज के कार्य को गति प्रदान करेंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज की सप्तक्रांति एवं वेद प्रचार की विस्तृत व्याख्या की और उन्होंने कहा कि जहां आर्य समाज वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिए कृत संकल्पित है वहीं सम–सामयिक मुद्दों पर भी अपनी आवाज बुलन्द करता है और आवश्यकता पड़ने पर आन्दोलन भी चलाता है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों के विरुद्ध सार्वदेशिक सभा के द्वारा घोषित सप्तक्रांति के मुद्दों पर राजस्थान में भी अभियान चलाया जायेगा। इसके अन्तर्गत जातिवाद मुक्त समाज, नशा मुक्त समाज, भ्रष्टाचार मुक्त समाज, साम्प्रदायिकता मुक्त समाज, पाखण्ड मुक्त समाज, महिला उत्पीड़न मुक्त समाज तथा शोषण मुक्त समाज के निर्माण के लिए आर्य समाज पूरे देश में अभियान चला रहा है। उसी के अनुरूप राजस्थान में भी इस दिशा में ठोस कार्यक्रम बनाये जायेंगे। श्री रामनिवास आर्य नारनौल ने भी बिरजानन्द जी को प्रधान निर्वाचित होने पर बधाई दी और मिशन आर्यावर्त के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र जी श्री बिरजानन्द जी को प्रधान पद ग्रहण करने पर प्रसन्नता प्रकट की तथा उन्हें बधाई दी। ब्र. दीक्षेन्द्र जी ने स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, रोहतक, हरियाणा में स्थापित किये जा रहे मिशन आर्यावर्त के स्टूडियो के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी और उन्होंने कहा कि स्टूडियो के माध्यम से सभी उपदेशक, भजनोपदेशक एवं विद्वानों को निःशुल्क अपने कार्यक्रम रिकॉर्ड कराने की सुविधा प्रदान कराई जायेगी और देश–विदेश में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में इस स्टूडियो की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

बैठक में सभा के मंत्री श्री कमलेश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री बलदेवराज आर्य, समाज के पूर्व मंत्री श्री ओम प्रकाश वर्मा, आर्य समाज आदर्शनगर के कार्यकारी प्रधान श्री रवि नैय्यर, आर्य शिक्षण संस्थाओं के मुख्य प्रशासक श्री श्रीनिवासन, श्री घनश्याम दास, श्री अनिरुद्ध साहनी, आर्य वीरदल राजस्थान के मुख्यअधिष्ठा श्री भंवरलाल आर्य, आर्य वीरदल जोधपुर के प्रधान श्री हरि सिंह आर्य, आर्य समाज शिवगंज के प्रधान श्री हरदेव सिंह आर्य, श्री प्रेमराज आर्य पाली, श्री अनन्तराम आर्य भरतपुर, श्री भूपेन्द्र आर्य निठौर भरतपरु, श्री हेमन्त शर्मा, श्री उम्मेद सिंह आर्य, श्री गजे सिंह भाटी, श्री भंवरलाल हठवाल, श्री विकास आर्य आदि जोधपुर से उपस्थिति रहे। इसके अतिरिक्त अजमेर, टौंक, झुंझूनू आदि स्थानों से भी आर्यजन बैठक में सम्मिलित थे। आर्य समाज आदर्शनगर के कोषाध्यक्ष श्री नाथूलाल आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। उनके अतिरिक्त आर्य समाज के धर्माचार्य श्री जानकी प्रसाद शर्मा, श्री राम कुमार गौड़, कार्यालय मंत्री श्री विकास आर्य, श्री देवेन्द्र त्यागी, श्री रामस्वरूप मीणा आदि ने बैठक में उपस्थित महानुभावों की आवास भोजनादि की व्यवस्था में उत्तम सहयोग किया।

अन्त में नवनिर्वाचित प्रधान श्री बिरजानन्द जी ने सभी आगन्तुक सदस्यों विशेषकर स्वामी आर्यवेश जी का आभार व्यक्त किया और कहा कि वे अपने इस दायित्व को पूरी निष्ठा के साथ निभाते हुए प्रयास करेंगे कि आर्य समाज की गतिविधियाँ पूरे प्रदेश में सक्रिय हो सकें। अन्तरंग सभा की बैठक में एक प्रस्ताव के द्वारा सभा प्रधान श्री बिरजानन्द जी, सभामंत्री श्री कमलेश आर्य तथा आर्य वीरदल के अधिष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य को यह अधिकार दिया गया कि वे अन्तरंग में हुए रिक्त स्थानों पर नई नियुक्तियाँ कर लें।

इस अवसर पर आर्थिक सहयोग भी सभा के लिए सभी सदस्यों ने प्रदान किया। बैठक की कार्यवाही सभा के मंत्री श्री कमलेश आर्य ने संचालित की। शांति पाठ के साथ बैठक उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुई।

आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति का आधार – देवयज्ञ

– उमेश चन्द्र

देवयज्ञ मनुष्य जाति के लिए आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति का आधार है। ऋषियों ने इसे पंच महायज्ञों में स्थान दिया है। याज्ञवल्क्य ऋषि ने देवयज्ञ के विषय में 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म', 'यज्ञो वै ज्येष्ठतमं कर्म' कहा है अर्थात् यज्ञ संसार का श्रेष्ठतम कर्म है।

देवयज्ञ शब्द में से पहले देव किसे कहते हैं? यह जान लेना आवश्यक है। यास्काचार्य द्वारा वर्णित 'देवो दानाद् वा दीपनाद् वा द्युस्थानों भवतीति वा'। जन सामान्य की दृष्टि से देव वह है जो देता ही रहता है, बदले में लेता कुछ नहीं है।

वैदिक साहित्य में देवता दो प्रकार के हैं – जड़ एवं चेतन। जड़ देवताओं में सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, अन्न, वायु–जल आदि। वेदानुसार –

"अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता – ऽऽ दिव्या देवता – । यजु. 14–201 चेतन देवताओं में माता–पिता, आचार्य, अतिथि एवं पति के लिए पत्नी और पत्नी के लिए पति।

इनको देवता इसलिए कहा गया है क्योंकि ये हमारे प्राणों (जीवन) की रक्षा करते हैं समस्त देवों का देव परमात्मा भी समस्त जीवों को शरीर देकर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

देवयज्ञ आर्य समाज की श्रेष्ठ पूजा पद्धति है। जल, वायु, वनस्पति, अन्न आदि देवताओं को शुद्ध पवित्र रखने के लिए ऋषियों ने यज्ञ का आविष्कार किया। यज्ञ में सर्वप्रथम अग्नि देवता का आह्वान कर – यज्ञ वेदी में स्थापित किया जाता है, क्योंकि 'अग्निर्वै देवानां मुखम्। इन जड़ देवताओं का मुख अग्नि है।

अग्नि में डाले गये पदार्थ, पदार्थ विज्ञान के अनुसार नष्ट नहीं होते, अपितु रुपान्तरित होकर सूक्ष्म रूप में कई गुना शक्तिशाली बनकर, अन्तरिक्ष में वायु एवं सूर्य रश्मियों के माध्यम से फैल कर व्यापक हो जाते हैं। पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक व्याप्त पर्यावरण अर्थात् सभी जड़ देवताओं को शुद्ध करने में सक्षम हो जाते हैं। तभी वेद में 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः। अथर्व – 9–10–14। अर्थात् देवयज्ञ को भुवन की नाभि कहा है।

भगवान मनु लिखते हैं – "अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यग् आदित्यमुपतिष्ठते।

आदित्याज्जायते वृष्टिः वृष्टेरन्नं ततः प्रजा।। मनु. 3–7611

अर्थात् अग्नि में अच्छी प्रकार डाली गई घृत आदि पदार्थों की आहुति सूर्य को प्राप्त होती है – सूर्य से वृष्टि होती है, वृष्टि से अन्न और अन्न से प्रजा उत्पन्न होती है। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण 'यज्ञाद् भवति पर्जन्यो' (गीता 3/4) अर्थात् देव यज्ञ से वर्षा होती है, कहते हैं।

जड़ देवताओं को शुद्ध पवित्र करना ही इनकी पूजा है। क्योंकि शुद्ध अन्न, जलवायु ही हमारे स्वास्थ्य, दीर्घजीवन एवं भौतिक समृद्धि की रक्षा करते हैं। यहां पूजा का अर्थ माला पहनाना, चन्दन लगाना, फूल चढ़ाना अथवा भोग लगाना नहीं है। वायु–जल, अन्न, सूर्य आदि देवताओं के साथ इस प्रकार की पूजा नहीं हो सकती।

चेतन देवता शरीरधारी हैं, उन्हें भूख–प्यास, सुख–दुःख अनुभव होता है। अतः उनकी पूजा अन्न–जल, औषधियां, वस्त्र देकर, माला पहनाकर, चन्दन लगाकर, सत्कार करके करते हैं। इस प्रकार पूजा अर्थ में दोनों स्थानों पर भिन्नता है।

अब प्रश्न उठता है कि देवयज्ञ में जड़ चेतन (ब्रह्मा, विद्वान्, वेदपाठी, संन्यासी आदि) देवताओं का पूजन होता है, उनकी रचना कौन करता है? उत्तर स्पष्ट है – निराकार, सृष्टि रचयिता, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी आदि गुणों से युक्त परमात्मा, उपरोक्त वर्णित देवताओं की रचना करता है अर्थात् जल, वायु आदि उसी ने बनाये हैं और चेतन जीवात्माओं को शरीर भी उसी ने दिये हैं। इस जड़–चेतन देवताओं की रचना उसी की है। मनुष्य की सामर्थ्य में देवताओं की रचना करना नहीं है।

लेकिन आज संसार में ईश्वर के बनाये हुए देवताओं की पूजा न होकर मनुष्य द्वारा लकड़ी, पत्थर, सोना, चांदी आदि से बनाये हुए देवताओं की पूजा हो रही है, जबकि बाजार में छैनी–हथोड़ा से बने और भौतिक रुपयों में बिकने वाले देवता नहीं हो सकते। यह आर्य समाज की श्रेष्ठ पूजा पद्धति देवयज्ञ एवं अन्य मत–मतान्तरों की पूजा पद्धति में मौलिक अन्तर है। देवयज्ञ द्वारा ईश्वर के बनाये हुए देवताओं का पूजन होता हैं

अत्यधिक पर्यावरण प्रदूषण का कारण ईश्वर द्वारा बनाये हुए देवताओं की पूजा (देवयज्ञ) की उपेक्षा ही है।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण ही आज समस्त प्राणी जगत दुःखों से ग्रसित है। मानव समाज में ऐसी भयंकर बीमारियों का जन्म हो गया है जिनका निदान लाखों रुपये खर्च करने पर भी नहीं होता है। औषधियों में आज वह गुण–रस नहीं है, जो पहले था। यह पर्यावरण प्रदूषण का ही परिणाम है।

अगला प्रश्न है कि देवताओं और ईश्वर में क्या अन्तर है? उत्तर – निराकार, सर्वव्यापक ईश्वर नित्य और जन्म–मरण के बन्धन से रहित है, जबकि देवता मरणधर्मा है। माता–पिता विद्वान् आदि देवता तो हैं लेकिन एक न एक दिन उनके शरीर शान्त होंगे, इसलिए मरणधर्मा हैं। सूर्य–चन्द्र, पृथ्वी, जल–वायु देवता तो हैं लेकिन प्रलयावस्था में ये सब वर्तमान स्वरूप में न रहकर मूल कारण प्रकृति में परिवर्तित हो जाते हैं। इसलिए देवता पूजा के विषय हैं। ईश्वर पूजा का विषय न होकर उपासना का विषय है, क्योंकि वह निराकार–निर्विकार होने से सभी प्रकार की आवश्यकताओं से रहित है।

आध्यात्मिक महत्व – वेद मन्त्रों के भावानुसार व्यक्ति में देव यज्ञ करते–करते त्याग–तपस्या, दान, सेवा, स्वाध्याय, संगतिकरण, सरल सत्यवाणी, भद्र सुनना, भद्र बोलना आदि दिव्य भाव उत्पन्न हो जाते हैं और वह श्रेय मार्ग का पथिक बन ईश्वरोन्मुख हो जाता है। वेद में कहा भी है – 'देवान्यज्ञेन बोधय'। (अथर्व 19–63–11) यज्ञ के द्वारा देवों (दिव्य भावों) को जगा। ईश्वर को सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी कर्मों का द्रष्टा एवं फल प्रदाता मानकर पाप कर्मों से बचने लगता है।

दैनिक यज्ञ की सम्पूर्ण विधि व्यक्ति को सत्पात्र बने रहने में पूर्ण सहायक है।

वेदानुसार 'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः'। यजु 31/16 अर्थात् विद्वान् पुरुष यज्ञ के माध्यम से (पवित्र यज्ञीय जीवन) यज्ञ पुरुष परमात्मा को प्राप्त हुए, सत्पात्र बने तथा मोक्ष को प्राप्त हुए। देवयज्ञ द्वारा व्यक्ति में नैतिक मूल्य इस प्रकार स्थापित हो जाते हैं कि वह बुराईयों के बीच में भी रहता हुआ बुराईयों से दूर रहता है। सत्य पर अडिग रहने का साहस उत्पन्न हो जाता है। यही व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति है।

देव यज्ञ में वेद मन्त्रों का उच्चारण कर आहुतियां देने से ईश्वरीय वाणी वेद की रक्षा होती है।

गीता में आता है –

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।। 3–11

इस यज्ञ के द्वारा देवताओं को उन्नत करो और वे देवता तुम लोगों को उन्नत करें। इस प्रकार निःस्वार्थभाव से एक दूसरे को उन्नत करते हुए परम कल्याण को प्राप्त हो जाओ।

प्रतिदिन देव यज्ञ क्यों करना चाहिए?

उत्तर – गीता में कहा है –

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।।

तैर्दत्तानप्रदायेभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।। 3–12।।

यज्ञ के द्वारा बढ़ाये हुए देवता तुम लोगों को बिना मांगे ही इच्छित भोग निश्चय ही देते रहेंगे। इस प्रकार उन देवताओं के द्वारा दिये हुए भोगों को जो पुरुष इनको (देवताओं को) बिना दिये स्वयं भोगता है, वह चोर ही है। हम जो भी धनोपार्जन कर भोग प्राप्त करते हैं, उसमें सहयोग करने वाले सभी का भाग जैसे मजदूर की मजदूरी, जमीन मालिक का लगान, पानी का कर, बिजली का बिल इत्यादि देते हैं, लेकिन देवताओं का भाग (देवयज्ञ द्वारा) नहीं देते हैं। क्या जल, वायु, पृथ्वी, सूर्य का प्रकाश–गर्मी, चन्द्रमा की शीतलता, वृक्ष आदि देवता उत्पादन में अर्थात् भोग प्राप्त करने में सहयोग नहीं करते हैं? इनकी ही उत्पादन में मुख्य भूमिका है, अतः इनका भाग भी देवयज्ञ के माध्यम से देना चाहिए। गीता में इनका भाग (हक) न देने वालों को ही चोर कहा गया है।

वेद में भी यज्ञ के महत्त्व पर अनेक मन्त्रों में उपदेश है – जैसे –

'यज्ञस्य प्राविता भव'। ऋ. 3–21–2 तू यज्ञ का रक्षक बन।

यज्ञो हि त इन्द्र वर्धनो भूत्'। ऋ. 3–32–12 हे जीव! यज्ञ ही तुझे बढ़ाने वाला है।

ईजानाः स्वर्गं ययन्ति लोकम्'। ऋ. अथर्व. 18–4–2 यज्ञकर्ता उत्तम सुख पाता है।

अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः। यजु. 23–62 यज्ञ विश्व ब्रह्माण्ड का केन्द्र है।

'इच्छन्ति देवाः सुन्वतम्'। ऋ. 8–2–18 यज्ञकर्ता को देवता भी चाहते हैं।

वेद भगवान ने अन्त में यहां तक कह दिया – इयं ते यज्ञिया तनूः। (यजु. 4–13) तेरा शरीर यज्ञ करने के लिए है। ऐसे अनेक वचन यह सन्देश देते हैं कि हमें मोक्ष के लिए, सुख के लिए, शान्ति के लिए, पर्यावरण शुद्धि के लिए प्रतिदिन देवयज्ञ करते रहना चाहिए।

– 13, पुरानी ईदगाहकालोनी, आगरा, उत्तर प्रदेश

बकरी को शेर कैसे बनायें?

– डॉ. विवेक आर्य

सत्य इतिहास पर आधारित

मोहन गुप्ता हिन्दू परिवार से थे। आप पेशे से कम्प्यूटर इंजीनियर थे। आपका मूर्ति पूज एवं पौराणिक देवी देवताओं की कथाओं में अटूट विश्वास था। आप बहुराष्ट्रीय कम्पनी में कार्यरत थे। आपको अनेक बार कंपनी की ओर से विदेश में कई महीनों के लिए कार्य के लिए जाना पड़ता था। एक बार आपको अफ्रीका में केन्या कुछ महीनों के लिए जाना पड़ा। केन्या की राजधानी नैरोबी में आपको कंपनी की ओर से मकान मिला। आपकी कम्पनी द्वारा हैदराबाद से एक अन्य इंजीनियर भी आया था जिसके साथ आपको मकान सांझा करना था।

हैदराबाद से आया हुआ इंजीनियर कट्टर मुसलमान, पांच वक्ता का नमाजी और बकरे जैसे दाढ़ी रखता था। उसने आते ही मोहन गुप्ता से धार्मिक चर्चा आरम्भ कर दी। मोहन गुप्ता से कभी वह पूछता आपके श्रीकृष्ण जी ने नहाती हुई गोपियों के कपड़े चुराये थे। क्या आप उसे सही मानते है? कभी कहता आपके इन्द्र ने वेश बदलकर अहिल्या के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाया था। क्या आप ऐसे इन्द्र को देवता मानेंगे? मोहन गुप्ता के लिए यह अनुभव बिल्कुल नवीन था। उन्होंने अपने जीवन में धर्म का अर्थ मंदिर जाना, मूर्ति पूजा करना, भोग लगाना, ब्राह्मणों को दान–दक्षिणा देना, तीर्थ यात्रा करना ही समझा था। धर्म ग्रन्थों में क्या लिखा है। यह तो पंडित लोगों का विषय है। यह संस्कार उन्हें अपने घर में मिला था। उनका मजहबी साथी आते–जाते इस्लाम का बखान और पुराणों पर आक्षेप करने में कोई कसर नहीं छोड़ता था। तंग आकर उन्होंने अपने ऑफिस में एक भारतीय जो हिन्दू था उससे अपनी समस्या बताई। उस भारतीय ने कहा यहां नैरोबी में हिन्दू मंदिर है। उसमें जाकर पंडितों से अपनी समस्या का समाधान पूछिए। मोहन गुप्ता अत्यन्त श्रद्धा और विश्वास के साथ स्थानीय हिन्दू मंदिर गए। मंदिर के पुजारी को अपनी समस्या बताई। पुजारी पहले तो अचरज में आया फिर हरि ओम कह चुप हो गया।

मोहन निराश होकर भारी कदमों में वापिस लौट आये। हताशा और भारी कदमों के साथ वह लौट रहे थे कि उन्हें नैरोबी का आर्य समाज मंदिर दिखा। उन्होंने मंदिर में प्रवेश किया तो अग्निहोत्र चल रहा था। उन्होंने अग्निहोत्र के पश्चात् प्रवचन सुना और उसे स्वामी दयानन्द, वेद और सत्यार्थ प्रकाश के विषय में उन्हें जानकारी मिली। प्रवचन के पश्चात् उन्होंने अपनी समस्या से समाज के अधिकारियों को अवगत करवाया। समाज के प्रधान ने उन्हें स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश देते हुए कहा – आपकी समस्या का समाधान इस पुस्तक में है। 14वें समुल्लास में आपको आपकी सभी शंकाओं का समाधान मिल जायेगा।

मोहन गुप्ता धन्यवाद देते हुए लौट गये। अगले एक सप्ताह तक उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय किया। 14वें समुल्लास को पढ़ते ही उनके निराश चेहरे पर चमक आ गई। बकरी अब शेर बन चुकी थी। शाम को उनके साथ कार्य करने वाले मुस्लिम इंजीनियर वापिस आये। मुस्लिम इंजीनियर ने आते ही मोहन गुप्ता से पूछा आपको मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला तो इस्लाम स्वीकार कर लो। अब मोहन गुप्ता की बारी थी। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के 14वें समुल्लास के आधार पर कुरान के विषय पर प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये। मजहबी मुसलमान के होश उड़ गये। उसने पूछा तुम्हें यह सब किसने बताया।

मोहन ने उसे सत्यार्थ प्रकाश के दर्शन करवाये। देखते ही मजहबी मुसलमान के मुंह से निकला। इस किताब ने तो हमारे सारे मंसूबों पर पानी फेर दिया। नहीं तो अभी तक हम सारे हिन्दुओं को मुसलमान बना चुके होते। मोहन ने अपने हृदय से स्वामी दयानन्द और आर्य समाज का धन्यवाद किया। भारत वापिस आकर वह सदा के लिए आर्य समाज से जुड़ गये एवं आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्ता बन गए।

वीर सावरकर के शब्दों में स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश ने हिन्दू जाति की ठंडी पड़ी रगों में उष्णता का संचार कर दिया।

अगर समस्त हिन्दू समाज स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश केउपदेश को मानने लग जाये तो हिन्दू (आर्य) जाति संसार में फिर से विश्व गुरु बन जाये।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

स्वास्थ्य चर्चा

पपीते के ११ स्वास्थ्यवर्द्धक गुण

एक इतालवी समुद्रयात्री क्रिस्टोफर कोलंबस ने एक बार कहा था कि पपीता फरिश्तों का फल है। एक ऐसा फल जिसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में मौजूद होता है और इसमें स्वास्थ्य के लिए कई हितकारी गुण निहित होते हैं। पपीते के कुछ बेहतरीन फायदों की सूची आगे दी गयी है।

1. कोलेस्ट्रोल कम करता है

पपीते में फाइबर, विटामिन सी और एंटी–ऑक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में होता है जो आपकी रक्त–शिराओं में कोलेस्ट्रोल के थक्के नहीं बनने देता। कोलेस्ट्रोल के थक्के दिल का दौरा पड़ने और उच्च रक्तचाप समेत कई अन्य हृदय रोगों का कारण बन सकते हैं। यह भी पढ़ें रू कोलेस्ट्रोल पर कसें लगामदृ रहें हृदय रोगों से दूर।

2. वजन घटाने में मदद करता है

जिन लोगों का लक्ष्य अपना वजन कम करना है उन्हें अपने आहार में पपीते को जरूर शामिल करना चाहिए क्योंकि इसमें कैलोरी बहुत कम होती है। पपीते में मौजूद फायबर एक और जहां आपको तारो–ताजा महसूस करवाता है वहीं आपकी आँत की मूवमेंट को ठीक रखता है जिसके फलस्वरूप वजन घटाना आसान हो जाता है। यह भी पढ़ें रू वजन घटाने के लिए 12 योगासन।

3. आपकी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है

आपका प्रतिरोधक तंत्र आपको बीमार कर देने वाले कई संक्रमणों के विरुद्ध ढाल का काम करता है। केवल एक पपीते में इतना विटामिन सी होता है जो आपके प्रतिदिन की विटामिन सी की आवश्यकता का 200 प्रतिशत होता है। जाहिर तौर पर ये आपके प्रतिरोधक तंत्र को मजबूत करता है।

4. मधुमेह रोगियों के लिए अच्छा है

पपीता मधुमेह रोगियों के लिए आहार के रूप में एक बेहतरीन विकल्प है क्योंकि स्वाद में मीठा होने के बावजूद इसमें शुगर नाम मात्र का होता है। साथ ही, वे लोग जो मधुमेह के मरीज नहीं हैं, इसे खाकर मधुमेह होने के खतरों को दूर कर सकते हैं। यह भी पढ़ें रू मधुमेह या डायबिटीज का घरेलु उपचार।

5. आपकी नजरों के लिए फायदेमंद है

पपीते में विटामिन ए भी प्रचुर मात्रा में होता है जो आपके आँखों की रोशनी को कम होने से बचाता है। कोई भी व्यक्ति उम्र बढ़ने की वजह से आँखों की रोशनी से मरहूम नहीं होना चाहता, और पपीते को अपने आहार में शामिल करके आप ऐसी मुसीबत से बाख सकते हैं।

6. गठिया रोगों से बचाता है

गठिया वास्तव में एक ऐसी बीमारी है जो शरीर को बेहद दुर्बल तो करती ही है जीवनशैली को बुरी तरह प्रभावित भी करती है। पपीते खाना आपकी हड्डियों के लिए बेहद लाभकारी हो सकता है, इनमें विटामिन–सी के साथ–साथ सूजन–रोधी गुण होते हैं जो गठिया के कई रूपों से शरीर को दूर रखता है। एक अध्ययन के अनुसार विटामिन–सी युक्त भोजन न लेने वाले लोगों में गठिया का खतरा विटामिन–सी का सेवन करने वालों के मुकाबले तीन गुना होता है।

7. पाचन शक्ति बढ़ाता है

आज के दौर में ऐसे खाने से मुंह मोड़ना जो आपके पाचन तंत्र के लिए बुरा हो, लगभग असंभव है। कई बार हम ऐसा भोजन करने को मजबूर होते हैं जो या तो जंक फूड की श्रेणी में आता है या अधिक तेल में पका होता है। रोज एक पपीते का सेवन कभी–कभार खाए ऐसे भोजन के साइड–इफेक्ट को दूर रखता है क्योंकि इसमें फाइबर के साथ–साथ पपैन नामक एक एंजाइम होता है जो आपकी पाचन शक्ति को दुरुस्त रखता है।

8. माहवारी के दर्द से छुटकारा दिलाता है

माहवारी के दर्द से गुजर रही महिलाओं को अपने आहार में पपीता जरूर जोड़ना चाहिए क्योंकि पापिन नाम एंजाइम माहवारी के दौरान रक्त के प्रवाह को दर्द से दूर रखता है।

9. उम्र बढ़ने की निशानियों को रोकता है

हम सब हमेशा जवान रहना चाहते हैं पर कोइ भी ऐसा करने में कामयाब नहीं हो पाया है। फिर भी, स्वास्थय वर्द्धक आदतों जैसे एक पपीता रोजाना, की मदद से आप अपनी उम्र के मुकाबले अधिक युवा दिख सकते हैं। पपीते में विटामिन सी, विटामिन ई और बीटा–कैरोटीन सरीखे एंटी–ऑक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में होते हैं जो आपकी त्वचा को झुर्रियों से दूर रखते हैं।

10. कैंसर को रोकता है

पपीते में एंटी–ऑक्सीडेंट, phytonutrients और flavonoids प्रचुर मात्रा में होते हैं जो आपकी कोशिकाओं को कश्ती पहुँचने नहीं देते। कुछ अध्ययनों ने पपीते के सेवन से कोलन और प्रोस्टेट कैंसर के खतरे के कम होने की पुष्टि भी की है। यह भी पढ़ें रू कैंसर के दस बेतुके मिथक।

11. तनाव कम करने में मदद करता है

पूरे दिन टूटकर काम करने के बाद घर लौटने पर अगर एक प्लेट पपीते खा लिए जाएं तो इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता। इस कमाल के फल में आपको तनाव से दूर रखने की ताकत है। युनिवर्सिटी ऑफ अलाबामा के एक अध्ययन के मुताबिक 200 उह विटामिन सी स्ट्रेस हारमोन को संचालित करने में सक्षम होता है। पपीते में यह प्रचुरता में उपलब्ध होता है। यह भी पढ़ें रू तनाव के इन दस लक्षणों में से आप किसके शिकार हैं?

19 दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष

आजादी के दीवाने अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी एवं रोशन सिंह

– कु. भावना

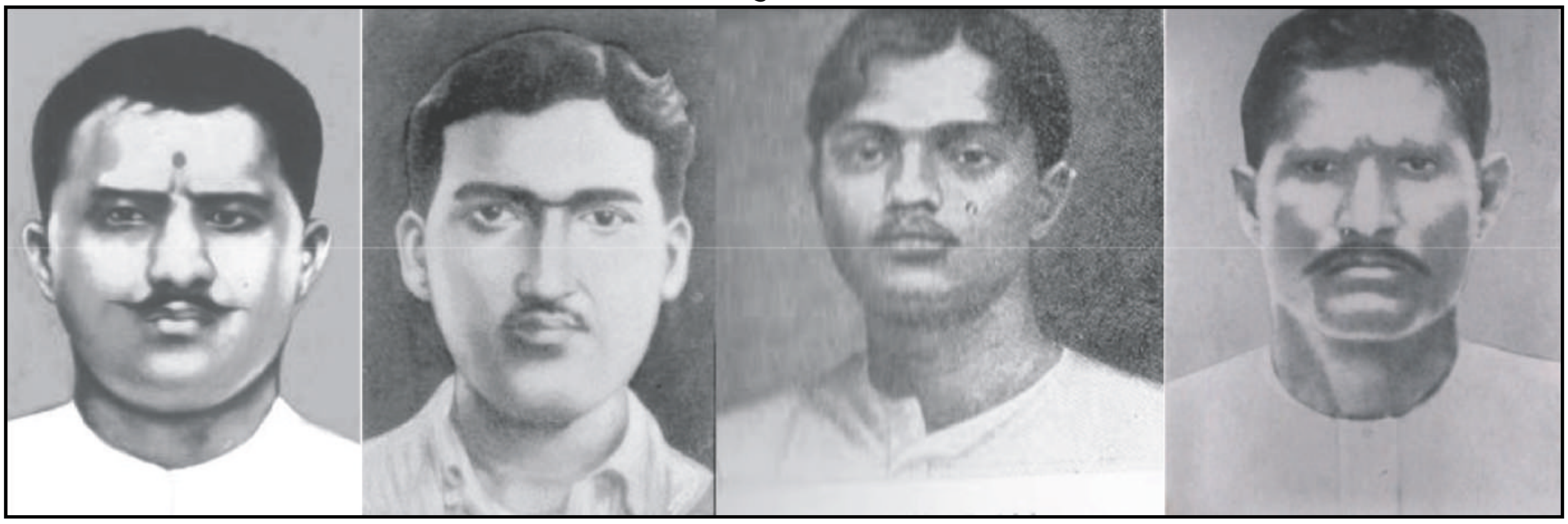

शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) निवासी पं. मुरलीधर तिवारी के यहाँ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी विक्रमी सम्वत् १८८४ को राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म हुआ। वे कचहरी में स्टाम्प बेचकर जीवन यापन करते थे। जब राम प्रसाद चौदह वर्ष के थे, तब उन्हें घर में चोरी करने, सिगरेट और भांग पीने तथा श्रृंगाररस पूर्ण उपन्यास पढ़ने की बुरी आदत पड़ गई। एक दिन नशे की हालत में पकड़े जाने से बुरी आदतें दूर हुई। परन्तु सिगरेट बहुत ज्यादा पीते थे। सहपाठी श्री सुशीलचन्द्र सेन के विशेष प्रयत्नों से यह बीमारी भी छूटी। समय बदला, रामप्रसाद बिस्मिल के धार्मिक संस्कार जागृत हुए। एक सज्जन की देखादेखी व्यायाम करने लगे। ब्रह्मचर्य पालन व नियमित व्यायाम करने से उनका शरीर बल्ष्ठि व बुद्धि तेज हो गई। मुंशी इन्द्रजीत की प्रेरणा से वे आर्य समाज के सम्पर्क में आए जो समाज सुधार व स्वतन्त्रता आन्दोलन में अग्रणी संस्था थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित 'सत्यार्थप्रकाश' के अध्ययन से तो उनका जीवन ही बदल गया। पर्यावरण शुद्धि व जनकल्याण के लिए वे 'यज्ञ' करते तथा विद्वानों की सेवा करते।

उन्होंने सर्वप्रथम शाहजहाँपुर में 'आर्यकुमार सभा' की स्थापना की। इसमें बच्चों व युवकों को देशभक्ति और समाज सेवा की प्रेरणा दी जाती थी। 'आर्य कुमार सभा' के अन्तर्गत युवकों को आत्मरक्षा व शस्त्र–शास्त्र का अभ्यास कराया जाता था। इसका साप्ताहिक अधिवेशन प्रत्येक शुक्रवार होता था। इसमें वाद–विवाद, भाषण व धार्मिक पुस्तकों का पठन–पाठन हुआ करता था। उन्होंने 'आर्य कुमार सभा' के अन्तर्गत अश्फ़ाक उल्ला खाँ, ठाकुर रोशन सिंह आदि अनेक देशभक्त नौजवान तैयार किये। भाई परमानन्द को फाँसी की सजा सुनकर उनके शरीर में आग लग गई। उन्होंने विचारा कि ''अंग्रेज बड़े पापी हैं, इनके राज्य में न्याय नहीं, मैं इसका बदला अवश्य लूँगा।'' जीवन भर अंग्रेजों के राज्य को विध्वंस करता रहूँगा। इस प्रकार की प्रतिज्ञा कर चुकने के पश्चात् वे सुप्रसिद्ध देशभक्त संन्यासी स्वामी सोमदेव जी से मिले, जो अपने भाषणों में जन–जागृति व आजादी के महान कार्य में जुटे हुए थे। अंग्रेजों के अत्याचारों के विरूद्ध उन्होंने क्रान्तिकारी युवकों का संगठन बनाया। इटावा के शिक्षक पं. गेन्दालाल दीक्षित उनके 'गुरु' थे। उनसे वे बन्दूक, पिस्तौल आदि शस्त्र चलाने सीखते। रामप्रसाद बिस्मिल ने अमेरिका को आजादी कैसे मिली, स्वदेशी रंग, क्रान्तिकारी जीवन, मन की लहर आदि पुस्तकें प्रकाशित कर क्रान्तिकारी दल के लिए धन की व्यवस्था की। किन्तु यह पर्याप्त न थी।

अंग्रेज सरकार भारतीयों पर हर तरह के जुल्म करती थी। अतः क्रान्तिकारियों ने निश्चय किया कि 'काकोरी रेलवे स्टेशन' के निकट रेलगाड़ी में सरकारी खजाने को लूटकर दल की गतिविधियाँ तेज की जाये। सभी साथियों ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में मिलकर कार्य करने की शपथ ली। अन्ततोगत्वा काकोरी के करीब रेलगाड़ी खड़ी करके सरकारी खजाना रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह आदि मात्र दस क्रान्तिकारियों ने लूट लिया। इससे दस हजार रुपये उनके हाथ लगे। कार्यकर्ताओं को इससे बड़ा उत्साह मिला। यह धन स्वाधीनता संग्राम में व्यय होने लगा।

काकोरी डकैती के बाद पुलिस बहुत सचेत हो गई। दल के सदस्य बनवारी लाल के सरकारी गवाह बन जाने से क्रान्तिकारी संगठन को गहरा धक्का लगा। राजद्रोहात्मक साहित्य पकड़ा गया। काकोरी काण्ड में लिप्त सभी सदस्य पकड़े गये। केवल चन्द्रशेखर 'आजाद' ही थे, जो बन्दी न बनाये जा सके। क्रान्तिकारियों को अमानवीय यातनाएँ दी जाने लगी। अशफ़ाक उल्ला खाँ को गहरी पीड़ा पहुँचाई गई। दल के सदस्य राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी कलकत्ता से गिरफ़्तार किये गये। अंग्रेजों के जुल्मों का क्या कहना?किसी कवि ने कहा है –

देश हित वार दीं, अनेक ही जवानियाँ।
जिनके खून से लिखी, स्वदेश की कहानियाँ।।

अशफ़ाक उल्ला खाँ, रामप्रसाद बिस्मिल को बड़ा भाई मानते थे। अतः इसी लगाव के कारण ब्रिटिश सरकार उन्हें बिस्मिल का सहकारी मानती थी। अशफ़ाक को हर प्रकार से पीड़ा पहुँचाने के बाद अंग्रेजों ने उन्हें बहकाने के लिए मुसलमान पुलिस अफसर को भेजा। पर आजादी का दीवाना अशफ़ाक उल्ला खाँ तो सच्चा देशभक्त था, अपने कर्तव्य से विमुख न हुआ। वीराग्रणी रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह को जज ने फाँसी की सज़ा व शचीन्द्र बख्शी, केशव चक्रवर्ती, मुकन्दी लाल, मन्मथ लाल गुप्त को कालेपानी की कठोर यातनाएँ दी गई। १६ दिसम्बर, १६२७ को गोरखपुर जेल में उन्हें फाँसी पर लटकाने से पूर्व उनकी 'अन्तिम इच्छा' पूछी गई, जिसे सुनकर कर्मवीर पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने उच्च स्वर से कहा – 'अंग्रेजी साम्राज्य का नाश हो' यह मेरी अन्तिम कामनाहै। वेद के पवित्र मन्त्र व जोशीले गीत गाते हुए बिस्मिल और उनके साथियों ने हंसते हुए फाँसी के फन्दे चूम लिये और सदा के लिए अमर हो गए।

इन क्रान्तिकारियों ने दशवासियों से अन्तिम प्रार्थना करते हुए कहा था कि वे सुशिक्षित बनें तथा जो कुछ करें, सब मिलकर देश की भलाई के लिए करें। इसी में सबका भला है।

मरते बिस्मिल, रोशन लाहिड़ी, अशफ़ाक अत्याचार से।
होंगे सैकड़ों पैदा इनके खून की धार से।।

'अशफ़ाक मेरा सच्चा मित्र एक संस्मरण' नाम शीर्षक से पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने लिखा कि –

''मैंने तुमने एक थाली में भोजन किया। मेरे हृदय से वह विचार ही जाता रहा कि हिन्दू–मुसलमान में कोई भेद है। तुम मुझ पर अटल विश्वास तथा अगाध प्रीति रखते थे। हाँ! तुम मेरा नाम लेकर पुकार नहीं सकते। तुम मुझे सदैव 'राम' कहा करते थे। एक समय जब तुम्हारे हृदय कम्प दौरा हुआ, तुम अचेत थे, तुम्हारे मुँह से बारम्बार 'राम', 'आय राम' शब्द निकल रहे थे। पास खड़े हुए भाई बन्धुओं को आश्चर्य था कि 'राम–राम' की रट थी। उस समय किसी मित्र का आगमन हुआ, जो 'राम' के भेद जानते थे। तुरन्त मुझे बुलाया गया। मुझसे मिलने पर तुम्हें शान्ति हुई, तब सब लोग 'राम–राम' के भेद समझे।''

बिस्मिल ने जेल में फाँसी से ३ दिन पूर्व दिल को हिला देने वाली आत्मकथा में यह लिखा है – ''अशफ़ाक! तुम्हारे दिल में मुल्क की खिदमत करने की इच्छा थी। तुम मेरे छोटे भाई जैसे हो गये। सबको आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्यसमाजी और मुसलमान का मेल कैसा?तुम एक सच्चे मुसलमान थे और और सच्चे देशभक्त भी। तुमने हमेशा चाहा कि मुसलमानों की खुदा अक्ल दे कि वे हिन्दुओं के साथ मिलकर हिन्दुस्तान की भलाई करें...... मैंने, अशफ़ाक! अपना तन–मन–धन सब मातृसेवा में अर्पण करके तुम जैसे अपने प्यारे मित्र को भी मातृभूमि की भेंट चढ़ा दिया।''

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

93 वां पंडित रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस सोल्लास सम्पन्न

क्रांतिकारियों के सिरमौर थे रामप्रसाद बिस्मिल–राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

स्वतन्त्रता आंदोलन की क्रांति के जनक थे बिस्मिल –डॉ जयेन्द्र आचार्य

शनिवार,19 दिसम्बर 2020, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में अमर शहीद पंडित रामप्रसाद बिस्मिल के 93 वें बलिदान दिवस के अवसर पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन जूम पर किया गया। यह कोरोना काल में परिषद् का 137 वां वेबिनार था।

वैदिक विद्वान आर्ष गुरुकुल नोएडा के प्राचार्य डॉ जयेन्द्र आचार्य ने कहा कि अमर शहीद पंडित रामप्रसाद बिस्मिल समस्त क्रांतिकारियों के गुरु थे व देश की आजादी के लिए संघर्षरत्त गर्म दल के क्रांति के जनक थे। शाहजहांपुर की उर्वरा धरती में महान क्रांतिकारी पंडित रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म हुआ।आर्य समाज शाहजहांपुर के सत्संग में स्वामी सोमदेव जी के प्रवचनों को सुनके बालक बिस्मिल के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा।उनसे प्रभावित होकर पंडित बिस्मिल ने सत्यार्थ प्रकाश पढा, जिसको पढ़ कर बिस्मिल का सम्पूर्ण जीवन बदल गया।नशे जैसी दुष्प्रवृत्ति में जकड़े नौजवानों ने सब बुराइयों को छोड़कर अपने जीवन को संयम तथा सदाचार के मार्ग पर लगा दिया। महर्षि दयानन्द को अपना गुरु मानकर देश को आजाद कराने का संकल्प लिया तथा सम्पूर्ण जीवन देश को आजाद कराने में लगा दिया तथा देश की आजादी की लड़ाई लड़ते लड़ते फाँसी के फंदे को चूम लिया।उन्होंने फांसी के फंदे को चूमते हुए कहा था 'मैं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन चाहता हूं' आचार्य जी ने कहा कि 'जो फांसी पर चढ़े खेल में उनको याद करे, जो वर्षों तक सड़े जेल में उनको याद करें'। उन्होंने बिस्मिल के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि क्रांतिकारियों के सिरमौर थे पंडित रामप्रसाद बिस्मिल। बिस्मिल से प्रेरणा पाकर अनेक नोजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े।उनके घनिष्ठ मित्र अशफाक उल्ला खां भी उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा लेकर महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया था और अनेकों युवा साथियों को लेकर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े।देश की आजादी की लड़ाई को मजबूत करने के लिए हथियारों और धन की आवश्यकता थी जिसे पूरा करने के लिए प्रसिद्ध काकोरी काण्ड को अंजाम दिया। देश के युवाओं के लिये उनका जीवन सदियों तक प्रकाश देता रहेगा।आज इतिहास को ठीक कर क्रांतिकारियों को सही सम्मान देने की आवश्यकता है, जिससे आने वाली पीढ़ी प्रेरणा ग्रहण कर सके ।

कार्यक्रम अध्यक्ष आर्य नेता वेद पाल आर्य (संरक्षक, आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत) ने कहा कि शहीद देश की अमानत है,समय समय पर उनको याद करके हम उनके जीवन से प्रेरणा लेकर नयी उर्जा का संचार कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि बिस्मिल पहले क्रांतिकारी थे जिनका वजन फांसी वाले दिन बढ़ गया था।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा की रामप्रसाद बिस्मिल को वैदिक धर्म को जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इससे उनके जीवन में नये विचारों और विश्वासों का जन्म हुआ। उन्हें एक नया जीवन मिला।उन्हें सत्य, संयम,ब्रह्मचर्य का महत्व आदि समझ में आया।

योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने कहा कि बिस्मिल बहुत अच्छे शायर थे, उनका लिखा गीत 'सरफरोशी की तमन्ना' हर व्यक्ति की जुबान से गाया जाता है।बिस्मिल ने फांसी से तीन दिन पहले जेल में अपनी आत्म कथा लिखी थी जो हर नौजवान को पढ़नी चाहिए।

सुप्रसिद्ध गायिका जनक अरोड़ा,रविन्द्र गुप्ता,ईश्वर देवी,विचित्रा वीर,अशोक गुगलानी ,काशीराम रजक,बिंदु मदान आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से जगदीश मालिक,अमरनाथ बत्रा,ओम सपरा, देवेन्द्र गुप्ता,देवेन्द्र भगत,नरेश प्रसाद आदि उपस्थित थे।

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।